

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 11, रूपांतरण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 11 है, धर्मांतरण।

हम उद्धार के सिद्धांत का अध्ययन जारी रखते हैं, इस बार धर्मांतरण पर चर्चा करते हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले आइए हम प्रभु का आशीर्वाद मांगें।

दयालु पिता, हम आपको आपके महान अनुग्रह के लिए धन्यवाद देते हैं, जिसने हमें संसार की नींव रखने से पहले मसीह में चुना, उसे हमारे स्थान पर मरने के लिए भेजा और शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन जी उठा, हमें एक नया जीवन देने के लिए अपनी आत्मा को भेजने के लिए ताकि हम यीशु को स्वीकार कर सकें जैसा कि सुसमाचार में पेश किया गया है। अपनी इच्छा के अनुसार हम में कार्य करें। हम प्रार्थना करते हैं कि अपने वचन और उसकी शिक्षाओं का उपयोग उस उद्देश्य के लिए करें, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से आपकी महिमा के लिए सभी चीजें करें।

आमीन। हम उद्धार को लागू करने के बारे में बात कर रहे हैं, और इसी तरह परमेश्वर वास्तव में अपने लोगों के जीवन में उद्धार लाता है जिसकी योजना उसने दुनिया के निर्माण से पहले बनाई थी, वह उद्धार जिसे उसने पहली सदी में मसीह के कार्य में पूरा किया था। लागू किया गया उद्धार मसीह के साथ एकता है; परमेश्वर हमें आध्यात्मिक रूप से अपने पुत्र से जोड़ता है ताकि उसके सभी आध्यात्मिक लाभ हमारे हो जाएँ।

चार गुना कहानी को पूरा करने के लिए, उद्धार की योजना बनाना, उसे पूरा करना, लागू करना और उसका पूर्ण होना इस पाठ्यक्रम के दायरे से बाहर है, सिवाय महिमा और अनन्त जीवन के, जिसे हमने उद्धार के पारंपरिक अनुप्रयोग में जोड़ा है। उद्धार के लिए धर्मांतरण, छोटा सा बाइबिल सारांश, विश्वास और पश्चाताप आवश्यक हैं। विश्वास और पश्चाताप अविभाज्य हैं लेकिन अलग-अलग हैं।

जब धर्म परिवर्तन की बात आती है तो वे एक सिक्के के दो पहलू हैं, क्योंकि सच्चा विश्वास हमेशा पश्चाताप की ओर ले जाता है। जब तक पाप से मुड़ना नहीं होता, लोग सच्चा विश्वास नहीं करते। विश्वास ईश्वर की ओर मुड़ना है, और पश्चाताप पाप से दूर हो जाना है।

धर्मांतरण, व्यवस्थित सूत्रीकरण, धर्मांतरण पश्चाताप और विश्वास का संक्षिप्त रूप है। अगला शीर्षक, पश्चाताप और विश्वास। अगला शीर्षक पश्चाताप है।

मैं मानता हूँ कि मैं इस खंड में बहुत रचनात्मक नहीं रहा हूँ। अगला शीर्षक है विश्वास। अगला शीर्षक है औचित्य।

यह एक नया विषय है। वास्तव में, धर्म परिवर्तन पश्चाताप और विश्वास का संक्षिप्त रूप है। पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस को थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों पर गर्व है, क्योंकि उनकी गवाही उनके पूरे क्षेत्र के लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गई है।

1 थिस्सलुनीकियों 1:8 से 10, हर जगह तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर फैल गया है। इसलिए, हमें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वे आप ही बताते हैं कि हमारा तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार हुआ, कि तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो और उसके पुत्र यीशु के स्वर्ग से आने की बात जोहते रहो, जिसे उसने मरे हुआओं में से जिलाया, और जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है। 1 थिस्सलुनीकियों 1:8 से 10।

धर्म परिवर्तन में न केवल मुड़ना शामिल है, बल्कि मुड़ना भी शामिल है, जैसा कि थिस्सलुनीकियों ने उदाहरण दिया, क्योंकि वे मूर्तियों से दूर होकर परमेश्वर की सेवा करने लगे। धर्म परिवर्तन के दो भाग हैं: पश्चाताप, पाप से मुड़ना, और विश्वास से मसीह की ओर मुड़ना। इन दोनों को उद्धार के दो चरणों के रूप में नहीं मानना बुद्धिमानी है क्योंकि ऐसा करने से उद्धार एक मानवीय कार्य बन जाता है जिसमें हम जो कदम उठाते हैं, वे शामिल होते हैं।

ये दो कदम नहीं बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जैसा कि हमने कहा क्योंकि मुड़ना एक ही कार्य है। किसी चीज़ से मुड़ना, इस मामले में, पाप, पश्चाताप में स्वचालित रूप से किसी और चीज़ की ओर मुड़ना शामिल है, इस मामले में, मसीह में विश्वास। रूपांतरण पश्चाताप और विश्वास के बाइबिल सिद्धांतों के लिए धार्मिक संक्षिप्त नाम है।

पश्चाताप और विश्वास संबंधित हैं, लेकिन समान नहीं हैं। जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीशु लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहते हैं, तो वे विश्वास का उल्लेख नहीं करते हैं, हालाँकि यह अच्छी तरह से निहित हो सकता है। मत्ती 3:1 और 2. उन दिनों में, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यहूदिया के जंगल में प्रचार करने आया और कहा कि पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

मत्ती 3:1 और 2. फिर से, मैं क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल से उद्धृत कर रहा हूँ क्योंकि ये नोट्स हाल ही में लिखे गए एक लेखन प्रोजेक्ट से लिए गए हैं। तब से, मत्ती 4:17, यीशु ने पश्चाताप का प्रचार करना शुरू किया क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। मत्ती 4, 17.

पश्चाताप और विश्वास एक समान नहीं हैं, लेकिन वे अविभाज्य हैं। हमारे लिए धर्मग्रंथों में धर्मांतरण की सिर्फ एक शैली ही नहीं है, बल्कि तरसुस के शाऊल का परमेश्वर द्वारा गतिशील धर्मांतरण और तीमुथियुस का परमेश्वर द्वारा शांत धर्मांतरण भी है। स्वर्गारोहित मसीह ने सामर्थ्य के साथ शाऊल से मुलाकात की, जब वह दमिश्क में विश्वासियों को सताने के लिए यात्रा कर रहा था।

जब मसीह ने शाऊल को ज़मीन पर गिरा दिया, तो शाऊल को पता चल गया कि यह परमेश्वर है, क्योंकि उसने पूछा, हे प्रभु, आप कौन हैं? प्रेरितों के काम 9, 5. शाऊल को जो उत्तर मिला वह

शास्त्र में किसी भी उत्तर से ज़्यादा चौंकाने वाला था। उद्धरण: मैं यीशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो। पद 5. तीमुथियुस का धर्म परिवर्तन एक तीव्र विरोधाभास प्रस्तुत करता है।

यद्यपि बचपन से ही उसका पिता अविश्वासी था, इस शब्द का प्रयोग स्तनपान करने वाले शिशुओं या छोटे बच्चों के लिए किया जाता है, और तीमुथियुस ने पवित्र शास्त्रों को सीखा था, अर्थात् पवित्र शास्त्र जो तुम्हें मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार के लिए बुद्धि दे सकते हैं। 2 तीमुथियुस 3:15. पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर ने तीमुथियुस को मसीह की ओर ले जाने के लिए किसे इस्तेमाल किया।

उद्धरण : मुझे आपकी ईमानदारी से भरी आस्था याद है जो पहले आपकी दादी लोइस और आपकी माँ यूनीके में थी, और अब मुझे यकीन है कि यह आप में भी है। 2 तीमुथियुस 1:5. महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि किसी का धर्म परिवर्तन नाटकीय है या शांत है, बल्कि यह है कि यह वास्तविक है जैसा कि पॉल और तीमुथियुस के लिए था। इसके अलावा, शास्त्र में व्यक्तियों और परिवारों दोनों के धर्म परिवर्तन दर्ज हैं।

पौलुस और तीमुथियुस के मामले व्यक्तिगत रूप से परिवर्तित हुए। पूरे परिवार भी मसीह की ओर मुड़े, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 16:14 और 15 में देखते हैं। लुदिया और उसके घराने ने विश्वास किया।

प्रेरितों के काम 16:31 से 34. फिलिप्पियों के जेलर ने पापा बेयर का अनुसरण किया। फिलिप्पियों के जेलर के परिवार ने पापा बेयर का अनुसरण किया और यीशु पर विश्वास किया।

पश्चाताप और विश्वास। यह प्रथागत नहीं है, लेकिन कई बार, शास्त्र ने उद्धार की शर्तों के रूप में पश्चाताप और विश्वास को जोड़ा है। प्रथागत यह है कि केवल एक को प्रकट किया जाए और दूसरे को निहित किया जाए।

लेकिन कभी-कभी हमें पूरा मिल जाता है, अगर आप चाहें तो हमें लंबा हाथ मिलता है। प्रेरितों के काम 19:4. पॉल ने कहा, उद्धरण के भीतर उद्धरण, जॉन ने पश्चाताप के बपतिस्मा के साथ बपतिस्मा दिया, लोगों से कहा कि उन्हें उस पर विश्वास करना चाहिए जो उसके बाद आएगा, वह यीशु है। प्रेरितों के काम 19:4. या प्रेरितों के काम 20:21 के बारे में क्या जब पॉल इफिसियन बुजुर्गों से मिलता है, जो मिलिटस में एक प्रोटो-प्रेस्बिटेरी की तरह है, और वह उनके साथ अपना जीवन, अपनी गवाही और रोम तक जाने के अपने इरादे को साझा करता है, यहां तक कि अपनी मृत्यु तक भी ले जाता है यदि ऐसा करना पड़ता है।

पौलुस कहता है कि मैं यहूदियों और यूनानियों दोनों को परमेश्वर के प्रति पश्चाताप और हमारे प्रभु यीशु में विश्वास के बारे में गवाही देता हूँ। प्रेरितों के काम 20:21. इब्रानियों 6:1 और 2, जब इब्रानियों का लेखक उन इब्रानी मसीहियों से आग्रह करता है, जिनमें से अधिकांश वास्तव में विश्वासी हैं और जब वह उनसे विश्वास में दृढ़ रहने का आग्रह करता है, जिससे उनके विश्वास की वैधता प्रदर्शित होती है और उनके आश्वासन को मजबूती मिलती है, तो वह विश्वास के एबीसी को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

आइए हम मसीह के बारे में प्राथमिक शिक्षाओं को छोड़ दें और परिपक्वता की ओर बढ़ें, मृत कर्मों से पश्चाताप, ईश्वर में विश्वास, अनुष्ठानिक स्नान, हाथ रखने, मृतकों के पुनरुत्थान और शाश्वत न्याय के बारे में शिक्षा की नींव न रखें। इब्रानियों 6:1 और 2. तो ये वो जगहें हैं जो मुझे मिल सकती हैं, और मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वे पूरी तरह से पूर्ण हैं, लेकिन करीब हैं जहाँ पश्चाताप और विश्वास को जोड़ा जाता है, लेकिन अधिक बार, बाइबल केवल एक या दूसरे का उल्लेख करती है। केवल पश्चाताप।

लूका 5:32. यीशु ने कहा कि मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ। लूका 5:32.

मैंने ऊपर मत्ती 4:17 का हवाला दिया है जहाँ यीशु ने केवल पश्चाताप का उल्लेख किया है। लूका 24 में यीशु के अपने शिष्यों के सामने पुनरुत्थान के दर्शन के बारे में क्या कहा गया है। लूका 24:46, 47.

यीशु ने उनसे यह भी कहा कि जो लिखा है, वह यह है: मसीहा दुख उठाएगा और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सभी राष्ट्रों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप की घोषणा की जाएगी। लूका 24:46 और 47. 2 कुरिन्थियों 7:9 और 10 के बारे में क्या ख्याल है।

अब मैं आनन्दित हूँ क्योंकि पौलुस ने लिखा कि तुम इसलिए शोकित नहीं हुए, बल्कि इसलिए कि तुम्हारे शोक ने पश्चाताप को जन्म दिया, क्योंकि तुम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार शोकित हुए, क्योंकि ईश्वरीय शोक से पश्चाताप उत्पन्न होता है, जो बिना किसी पछतावे के उद्धार की ओर ले जाता है, जबकि सांसारिक शोक से मृत्यु उत्पन्न होती है। 2 कुरिन्थियों 7:9 और 10. 2 पतरस 3:9. प्रभु अपने वादे में देरी नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग देरी समझते हैं, बल्कि तुम्हारे साथ धीरज रखता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि सभी को पश्चाताप मिले।

2 पतरस 3:9. अक्सर, इसलिए कभी-कभी, शास्त्र पश्चाताप और विश्वास दोनों का उल्लेख करता है। हम धर्म परिवर्तन के विषय पर बात कर रहे हैं, जो पश्चाताप और विश्वास के बारे में बाइबल की शिक्षाओं के लिए धर्मशास्त्रीय संक्षिप्त रूप है, जिसका अर्थ है पाप से पश्चाताप करना और मसीह की ओर मुड़ना क्योंकि वह सुसमाचार विश्वास की पेशकश कर रहा है, और हमने कहा है कि कभी-कभी, अक्सर नहीं, शास्त्र पश्चाताप और विश्वास दोनों का उल्लेख करता है। अन्य बार, अधिक बार, यह विश्वास और पश्चाताप का उल्लेख करता है।

हालाँकि, सबसे ज़्यादा बार इसमें विश्वास का ज़िक्र किया गया है। सबसे ज़्यादा बार, शास्त्र विश्वास को उद्धार की एकमात्र शर्त के रूप में सूचीबद्ध करता है। यूहन्ना 3, 16.

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। रोमियों 1:16 और 17. रोमियों की पुस्तक का विषयगत कथन।

मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है। सबसे पहले, यहूदी और यूनानी दोनों के लिए, क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है जैसा कि लिखा है कि धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा। रोमियों 1:16 और 17।

मेरी आदत है कि मैं आयतों को दोहराता हूँ, ताकि अगर कोई उन्हें लिखना भूल जाए तो उसे याद रखूँ। गलातियों 2, 16. हम जानते हैं कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं बल्कि यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराया जाता है, भले ही हम मसीह यीशु पर विश्वास करते हों।

ऐसा इसलिए किया गया था ताकि हम मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें, न कि व्यवस्था के कामों के द्वारा, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं ठहरेगा। यह बाइबल में सबसे जोरदार आयत है कि कैसे धर्मी ठहरना कामों से नहीं बल्कि विश्वास से होता है। तीन बार, यह उन दोनों सत्यों और इफिसियों 2:8 के बारे में कहता है। एक प्रसिद्ध घोषणा है कि आप विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बचाए गए हैं, और यह उद्धार आप से नहीं है। यह भगवान का उपहार है।

इफिसियों 2:8. तो, कभी-कभी पवित्रशास्त्र उद्धार की शर्तों के रूप में पश्चाताप और विश्वास दोनों का नाम लेता है, लेकिन अधिक बार, यह पश्चाताप या विश्वास, विशेष रूप से बाद वाले को एकमात्र शर्त के रूप में उल्लेख करता है। पश्चाताप और विश्वास अलग-अलग हैं लेकिन भगवान की योजना में अविभाज्य हैं। वे एक ही चीज़ नहीं हैं लेकिन वे सहसंबंधी हैं वे भगवान के काम में अविभाज्य हैं।

वे दो अलग-अलग स्थितियाँ नहीं हैं, बल्कि एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए जब धर्मग्रंथ केवल पश्चाताप या विश्वास को सुसमाचार के प्रति सही प्रतिक्रिया के रूप में नामित करता है, तो इसका तात्पर्य दूसरे से है। जॉन मुरे ने अपनी छोटी लोकप्रिय पुस्तक में, जो बहुत उपयोगी है, रिडेम्पशन एक्म्पलिशड एंड अप्लाइड इन एप्लाइड सेक्शन में, सही बात कही है। उस प्रश्न को उद्धृत करें जिस पर चर्चा की गई है, जो कि पूर्व विश्वास या पश्चाताप है।

यह एक अनावश्यक प्रश्न है, और यह आग्रह कि एक दूसरे से पहले है, व्यर्थ है। कोई प्राथमिकता नहीं है। जो विश्वास मोक्ष की ओर ले जाता है वह पश्चातापी विश्वास है, और जो पश्चाताप जीवन की ओर ले जाता है वह विश्वासपूर्ण पश्चाताप है। यह याद रखने योग्य है।

वह विश्वास जो मोक्ष की ओर ले जाता है, पश्चातापी विश्वास है, पश्चातापी विश्वास है, और वह पश्चाताप जो जीवन की ओर ले जाता है, वह विश्वासपूर्ण पश्चाताप है। जॉन मुरे रिडेम्पशन एक्म्पलिशड एंड एप्लाइड पेज 113. अपने सुधारित अभिव्यक्ति में व्यवस्थित धर्मशास्त्र, उदाहरण के लिए, बाइबिल धर्मशास्त्र पर बहुत अधिक जोर देने और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के बेहतर ज्ञान के साथ मुरे से आगे बढ़ गया है, लेकिन उनके कार्य अभी भी मूल्यवान, ठोस और सहायक हैं, एक महान आधार जिस पर निर्माण किया जा सकता है।

पश्चाताप: विश्वास और पश्चाताप दोनों पर चर्चा करते समय एक और अंतर आवश्यक है। जैसा कि हमने देखा है, दोनों ही आरंभिक उद्धार के बारे में बात करने के तरीके हैं, लेकिन केवल इतना ही नहीं, दोनों ही निरंतर उद्धार का वर्णन करने के तरीके भी हैं। पश्चाताप अक्सर लोगों के पाप से उद्धार में मसीह की ओर मुड़ने की बात करता है।

दयालुता से, परमेश्वर पापियों को पश्चाताप करने और बचाए जाने में सक्षम बनाता है। प्रेरितों के काम 11:18, जब उन्होंने यह सुना, तो वे चुप हो गए। पतरस प्रेरितों को कुरनेलियुस के साथ अपने अनुभव के बारे में बता रहा है, और वे परमेश्वर की महिमा करते हुए कहते हैं कि परमेश्वर ने पश्चाताप प्रदान किया है, जिसके परिणामस्वरूप अन्यजातियों को भी जीवन मिला है।

यह परमेश्वर का उद्देश्यपूर्ण पाठ था। प्रेरितों के काम 11:18 पुराने नियम में था, लेकिन फिर भी, उन्हें इसे उस तरह से सीखने के लिए इसे सुनने की ज़रूरत थी। 2 तीमुथियुस 2:24-25 प्रभु के सेवक को झगड़ा नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी के साथ नम्रता से पेश आना चाहिए।

जब मेरा पादरी यह उदाहरण देता है कि वह सिखाने में सक्षम नहीं है और धैर्यवान है, अपने विरोधियों को नम्रता से निर्देश देता है, तो शायद परमेश्वर उन्हें पश्चाताप प्रदान करेगा, उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाएगा। 2 तीमुथियुस 2:24-25। इसका दूसरा नाम सुसमाचारी पश्चाताप है।

सुसमाचार पश्चाताप। मैंने इसे अभी बनाया है, लेकिन इसका यही अर्थ है। उन आयतों में, पश्चाताप ईश्वर का उपहार है।

इससे पहले, हमने उन छंदों का हवाला दिया जो दर्शाते हैं कि पश्चाताप एक मानवीय जिम्मेदारी है। अभी उद्धृत दो छंदों से पता चलता है कि पश्चाताप ईश्वर का उपहार है। वाह, ईश्वर ने अन्यजातियों को पश्चाताप दिया। प्रेरितों ने पतरस के आश्चर्यजनक समाचार पर टिप्पणी की, और मुझे पता है कि यह एक असामान्य संदर्भ है, यह पौलुस है जो तीमुथियुस को भूल में उलझे हुए, भूल में फंसे हुए लोगों के साथ धैर्य रखने की शिक्षा दे रहा है, धैर्य से निर्देश दें कि शायद ईश्वर उन्हें पश्चाताप दे, इसलिए उन दोनों के लिए आपका पश्चाताप ईश्वर का उपहार है, मेरे साथ इसका दूसरा नाम इंजील पश्चाताप है, ईश्वर का उपहार है, पश्चाताप भी मानवीय जिम्मेदारी है मत्ती 4:17 यीशु ने कहा जैसा कि हमने देखा है पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है मत्ती 4:17

2 कुरिन्थियों 7:10 हम पहले भी यहाँ आ चुके हैं। ईश्वरीय शोक पश्चाताप उत्पन्न करता है जो बिना पछतावे के मोक्ष की ओर ले जाता है, लेकिन सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है। 2 शमूएल 7:10 क्या पाप पर दुःख एक अच्छा संकेत है? हाँ, क्या यह रूपांतरण का एक निश्चित संकेत है? नहीं, यह केवल आत्म-दया हो सकती है। यह एक दुःख भी हो सकता है, प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के बिना पाप के लिए एक वास्तविक वास्तविक दुःख। पश्चाताप प्रारंभिक और बचाने वाला सुसमाचार है। यह निरंतर और पवित्र करने वाला भी है, इसलिए हम पाप से प्रारंभिक बचत मोड़, तथाकथित सुसमाचार पश्चाताप के बीच अंतर कर रहे हैं। मुझे लगता है कि सुधारकों ने उस अभिव्यक्ति और ईसाई जीवन के हिस्से के रूप में निरंतर पश्चाताप के साथ आ सकते हैं। हम किसी के पश्चाताप करने और यीशु के पास आने और विश्वासियों के बीच अंतर कर रहे हैं जो

सार्वजनिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से भगवान की पूजा और पूजा के हिस्से के रूप में अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, हर रविवार को अपने पापों को स्वीकार करते हैं।

प्रतिदिन पश्चाताप करना, रविवार से भी अधिक बार, ईसाई जीवन का एक सामान्य हिस्सा है और प्रारंभिक पश्चाताप का फल है। ईसाई पश्चाताप का दूसरा नाम है बार-बार पापों से परमेश्वर की ओर मुड़ना, यीशु के प्रति कृतज्ञता और परमेश्वर की महिमा को आगे बढ़ाने की इच्छा से। ईसाई पश्चाताप निरंतर पश्चाताप बार-बार पापों से परमेश्वर की ओर मुड़ना है, यीशु के प्रति कृतज्ञता और परमेश्वर की महिमा करने की इच्छा से। पश्चाताप जीवन का एक तरीका है क्योंकि ईसाई आत्मा में चलते हैं और हर दिन पाप से लड़ते हैं। कभी-कभी, विश्वासी ठोकर खाते हैं लेकिन फिर सही तरीके से चलने के लिए पश्चाताप करते हैं।

यह प्रक्रिया आजीवन चलती है, क्षमा करें। इसमें बार-बार ईश्वर और धार्मिकता के लिए हाँ कहना और पापपूर्ण विचारों, भाषण और कार्यों के लिए ना कहना शामिल है, जैसा कि टाइटस ने हमें अपने पत्र में याद दिलाया है। मेरे पास कोई लिखित अंश नहीं है, लेकिन इसने मुझे बस यही याद दिलाया।

इस तरह की बात करना खतरनाक है। तीतुस 2, उफ़, मुझे लगा कि वह मेरे पास है। तीतुस 2:11 क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ है, जो सभी लोगों के लिए उद्धार लाता है, और हमें अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं को त्यागने और धर्मी जीवन जीने, आत्म-संयमित, धर्मी और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित करता है, जो इस समय हमारी धन्य आशा, हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहा है।

मैं जो खोज रहा हूँ वह है पाप को ना कहना और धार्मिकता को हाँ कहना। मुझे नहीं लगता कि मैंने तीतुस में इसे बनाया है, लेकिन मैं इसे जारी रखूँगा; मुझे खेद है। लाओदीकिया की कलीसिया के लिए, प्रकाशितवाक्य 3:19 और 20, यीशु के पास फटकार और प्रोत्साहन के शब्द हैं जैसा कि वह प्रत्येक कलीसिया के लिए करता है, उद्धारण, जितने से मैं प्यार करता हूँ, मैं उन्हें फटकारता हूँ और अनुशासित करता हूँ।

हम इब्रानियों 12 में पढ़ रहे हैं; परमेश्वर हर बेटे को ग्रहण करता है, उसे अनुशासित करता है। इसलिए जोशीले बनो और मन फिराओ, देखो मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटाता हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके भीतर आऊँगा और उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।

इस संदर्भ में, यह सुसमाचार का निमंत्रण नहीं है। क्या इसका उपयोग सुसमाचार के संदर्भ से बाहर किया जा सकता है? हाँ। क्या यह एक बढ़िया विचार है? शायद नहीं।

इसके संदर्भ में, वह विश्वासियों को पश्चाताप करने और उसके साथ मधुर संगति में लौटने के लिए बुला रहा है। ईसाई पश्चाताप की अवधारणा अक्सर पश्चाताप शब्दों के बिना शास्त्रों में होती है। जेम्स बार, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *बाइबिल के शब्द और उनके अर्थ में*, बार अपने स्वयं के विश्वासों में हमारे विश्वास के लिए कोई मार्गदर्शक नहीं हैं, लेकिन वे एक शानदार विद्वान हैं।

इसलिए, हम उनके लेखन से लाभान्वित होते हैं, उन्होंने हमें बताया कि शब्द अवधारणा भ्रांति में न पड़ें। इस मामले में, यह कहना होगा कि उस अवधारणा को गलत बनाने के लिए आपके पास पश्चाताप शब्द या पश्चाताप शब्द होना चाहिए। वह शब्द, वह अवधारणा कई तरीकों से व्यक्त की जा सकती है, जैसा कि वास्तव में, शास्त्र करता है।

ईसाई या निरंतर ईसाई जीवन पश्चाताप की अवधारणा अक्सर शास्त्रों में उन आकर्षक शब्दों के बिना होती है। इफिसियों 4:20 से 24, यह वह तरीका नहीं है जिससे आप मसीह को जानते हैं, यदि आपने उसके बारे में सुना और उसके द्वारा सिखाया गया जैसा कि यीशु में सत्य है। अपने पुराने जीवन के तरीके को उतार फेंको, जो कि छलपूर्ण इच्छाओं से भ्रष्ट हो गया है, अपने मन की आत्मा में नया बनो, और नए मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर की समानता के अनुसार धार्मिकता और सत्य की शुद्धता में बनाया गया है।

यह कल्पना कपड़ों का परिवर्तन है; पुराने तरीकों को उतारना पश्चाताप है, और नए तरीकों को अपनाना परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है। रोमियों 6:15 से 23 को भी देखें, और हम इन सभी जगहों पर नहीं जा रहे हैं। कुलुस्सियों 3:5 से 10, इब्रानियों 3:12 से 15, 1 पतरस 2:1 से 3, 1 यूहन्ना 1:8 से 10।

जो लोग इसे लिखना चाहते हैं, उनके लिए एक बार फिर। पश्चाताप या पश्चाताप शब्दों के बिना पश्चाताप की अवधारणा के लिए भी देखें। रोमियों 6:15 से 23, कुलुस्सियों 3:5 से 10, इब्रानियों 3:12 से 15, 1 पतरस 2:1 से 3, 1 यूहन्ना 1:8 से 10।

विश्वास का अर्थ है मसीह पर विश्वास करना, उसे उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करना और उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करना। बाइबल सिखाती है कि उद्धार के लिए विश्वास आवश्यक है। वास्तव में, इब्रानियों 12:11 6 इब्रानियों 11 6 के अनुसार, विश्वास के बिना, परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है क्योंकि जो उसके निकट आता है उसे विश्वास करना चाहिए कि वह मौजूद है और वह अपने चाहने वालों को पुरस्कार देता है।

उद्धार केवल मसीह में विश्वास से ही मिलता है, जैसा कि नए नियम का हर भाग गवाही देता है। यूहन्ना 14:6, यीशु ने कहा, मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता।

प्रेरितों के काम 4:12 स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के बीच दिया गया एकमात्र नाम है जिसके द्वारा हमें उद्धार पाना चाहिए। वह यीशु मसीह का नाम है। रोमियों 10:9 और 10 में, पौलुस पुराने नियम के संदेश को उद्धृत करता है कि जो कोई पुकारेगा, जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा, और वह इसे प्रभु यीशु मसीह पर लागू करता है।

जो कोई यीशु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा। नए नियम में परमेश्वर पर सामान्य विश्वास उद्धार नहीं देता। मसीह पर विशिष्ट विश्वास उद्धार देता है।

याकूब 2:1, याकूब की पहली आयत के बगल में एक बार जब याकूब ने यीशु का जिक्र किया, तो उसने कहा कि हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह पर अपने विश्वास को पक्षपात के साथ न रखें।



आप हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह या महिमा के प्रभु यीशु मसीह का अनुवाद कर सकते हैं। दोनों में से कोई भी ईश्वर के पुत्र के लिए एक दिव्य उपाधि है।

प्रकाशितवाक्य 14:12, ये सभी जगहें हमें बताती हैं कि उद्धार पाने के लिए यीशु पर विश्वास करना ज़रूरी है। प्रकाशितवाक्य 14:12. यहाँ संतों के धीरज का आह्वान किया गया है।

नरक या अनंत दण्ड के बारे में एक मजबूत अंश के तुरंत बाद। वाह। यहाँ संतों के धीरज का आह्वान किया गया है।

जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर विश्वास रखते हैं। वास्तव में, यह मसीह में विश्वास में दृढ़ता की बात कर रहा है, न केवल उसे एक बार और हमेशा के लिए स्वीकार करना बल्कि रहस्योद्घाटन के संदर्भ में विश्वास करना जारी रखना, यहां तक कि उत्पीड़न सहना भी। शास्त्रों में विश्वास को विभिन्न तरीकों से दर्शाया गया है।

पुराने नियम में विश्वास के कई वर्णन हैं, जिनमें प्रभु पर विश्वास करना भी शामिल है। उत्पत्ति 15:6, अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया, क्योंकि उसने परमेश्वर में शरण ली। भजन संहिता 5:11, उस पर भरोसा किया।

भजन 9:10, परमेश्वर पर भरोसा रखना। भजन 21:7, परमेश्वर की बाट जोहना। भजन 27:14, उस पर आशा रखना।

भजन 42:5, 42:11, और भी बहुत कुछ। यहाँ क्या हो रहा है? क्या ये बिलकुल अलग-अलग बातें हैं? नहीं, नहीं। हमारे पास एक बड़ा घेरा हो सकता है जो विश्वास में विश्वास करने या परमेश्वर पर भरोसा करने की बात करता है।

और ये सभी इसे व्यक्त करने के तरीके हैं। ऐसा क्यों? एक बात के लिए, यह पुराने नियम के शास्त्रों की सुंदरता को दर्शाता है जब इस तरह की शब्दावली विविधता का उपयोग किया जाता है। और दूसरे अर्थ के लिए संदर्भ में कुछ अभिव्यक्तियाँ अन्य संदर्भों में अन्य अभिव्यक्तियों की तुलना में कुछ लोगों तक बेहतर तरीके से पहुँचती हैं।

जानकारी से संबंधित इन व्याख्याओं को करते हुए भी, मैंने 40 वर्षों तक सोचा कि मैंने चीजें सीखी हैं क्योंकि मैंने उन्हें पहले उस तरह से नहीं देखा था। अरे, यह जितना मैंने सोचा था उससे भी बेहतर समझ में आता है या वाह, यह इतना स्पष्ट है। वह शास्त्र बहुत सुंदर है।

अब मैं इसे बेहतर तरीके से समझा सकता हूँ। मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। यह सब इन घंटों के दौरान हुआ, जब हम साथ में व्याख्यान दे रहे थे।

इसलिए, परमेश्वर अपने लोगों के प्रति दयालु है, और वह सुसमाचार को समझाता है, इस मामले में, विश्वास की आवश्यकता, हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कई तरीकों से। यह नए नियम के लिए भी ऐसा ही है। विश्वास के बारे में बात करने के कई अलग-अलग तरीके हैं।

अकेले यूहन्ना का सुसमाचार विश्वास को मुख्य रूप से विश्वास करने के रूप में बताता है, पाठ्य भिन्नता के आधार पर 99 या 100 बार, यह बहुत बार है, लेकिन यीशु में विश्वास करने के रूप में भी। बस विश्वास करो, ठीक है? मसीह में विश्वास करना। यीशु के नाम पर विश्वास करना, यूहन्ना 1:12। उस पर विश्वास करना, यूहन्ना 3:16। उसके वचन पर विश्वास करना, 4:50। मसीह को ग्रहण करना, यूहन्ना 1:12। इसका अर्थ उस पर विश्वास करने से अलग कुछ नहीं है।

उसकी गवाही को स्वीकार करना, यूहन्ना 3:33. उसके पास आना, यूहन्ना 6:35. उसके पास आना यूहन्ना 6:35 में परिभाषित किया गया है, जहाँ यीशु ने इसके विपरीत कहा है, यह गलत शब्द है, यह समानार्थी के रूप में दिखाता है, उसके पास आना और उस पर विश्वास करना। मैं जीवन की रोटी हूँ। मुझे माफ़ करें।

यीशु ने कहा, मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा, उसे भूख नहीं लगेगी। और जो मुझ पर विश्वास करेगा, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।

आगे की आयतों में, कभी-कभी विश्वास का जिक्र किया गया है, लेकिन यह भी कहा गया है कि यह मेरे पास आता है। पिता ने जो कुछ मुझे दिया है, वह मेरे पास आएगा। जो कोई मेरे पास आया है, मैं उसे ऐसे ही बाहर नहीं निकालूँगा।

इसका मतलब है यीशु पर विश्वास करना। यह मसीह में विश्वास, मसीह में उद्धार करने वाले विश्वास के बारे में बात करने का एक तरीका है। वास्तव में, जॉन 15:4-7 में क्रिया मेनो का सामान्य उपयोग, मसीह में विश्वास के बारे में बात करने का एक और तरीका है।

परम्परागत अब व्यवस्थितता की ओर अधिक अग्रसर है, तथा आस्था का परम्परागत उत्तर-सुधारात्मक विश्लेषण सहायक है। आस्था में नोटिटिया, असेन्सस और फिडुसिया शामिल हैं। नोटिटिया का अर्थ है ज्ञान।

विश्वास में ज्ञान शामिल है। विश्वास करने के लिए, एक निश्चित मात्रा में ज्ञान की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को सुसमाचार संदेश सुनना चाहिए।

रोमियों 10:17, विश्वास सुनने और मसीह के बारे में वचन सुनने से आता है। उस संदेश में उद्धार की आवश्यकता, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के तथ्य, या कम से कम, उसकी मृत्यु, और उद्धारक विश्वास की आवश्यकता शामिल है। यह ज्ञान है, नोटिटिया।

असेन्सस का मतलब है, जैसा कि सुनने में लगता है, सहमति। उद्धार पाने के लिए सुसमाचार के तथ्यों से सहमत होना ज़रूरी है। नए नियम के कुछ प्रोफेसर हैं जिन्होंने ग्रीक में नए नियम को याद कर लिया है, लेकिन वे इस पर बहुत कम या शायद बिलकुल भी विश्वास नहीं करते।

20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली न्यू टेस्टामेंट विद्वान, रुडोल्फ बुल्टमैन, एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्होंने पाठ को इस तरह याद कर लिया था। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को छोड़कर हर प्रमुख सिद्धांत को नकार दिया।

ओह, यीशु एक मनुष्य था, और वह मर गया, लेकिन वह जी नहीं उठा। वह फिर से नहीं आ रहा है। स्वर्ग और नर्क नहीं है, और भी बहुत कुछ है।

विश्वास, न केवल उद्धारक विश्वास में, बल्कि केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि सहमति भी शामिल है। तथ्यों का ज्ञान आवश्यक है लेकिन अपर्याप्त है। उन्हें ईश्वर का सत्य मानकर स्वीकार करना चाहिए।

फिडुसिया का मतलब है भरोसा, जैसे फिडुशियरी। फिडुसिया का मतलब है भरोसा। सुसमाचार के तथ्यों से सहमत होना भी अपर्याप्त है।

मार्टिन लूथर ने कहा कि मैं तथ्यों को जानता हूँ। मैं उनसे सहमत हूँ। लेकिन जब तक वह यीशु में विश्राम नहीं करता, तब तक वह बचा नहीं था, जैसा कि मेरे पादरी कहना पसंद करते हैं, क्योंकि उसने व्यक्तिगत रूप से मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा किया था।

उद्धार पाने के लिए, जैसा कि मैंने अभी कहा, हमें व्यक्तिगत रूप से मसीह पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करना चाहिए। एक बार फिर, मुझे यहाँ थोड़ी चिंता है। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि ये विश्वास को बचाने के तीन कदम नहीं हैं, बल्कि विश्वास को बचाने के तीन पहलू हैं।

पीटरसन, इन चरणों में तुम्हें क्या दिक्कत है? मैं अनंत जीवन के चार चरणों को लेकर घबराया हुआ हूँ। पश्चाताप करो, ग्रहण करो, विश्वास करो। नहीं, नहीं।

विश्वासवाद जैसी कोई चीज़ नहीं है ? ज़रूर, है।

और इसलिए हम सुसमाचार को ध्यान से समझाते हैं। एक व्यक्ति को ईमानदारी से विश्वास करने की आवश्यकता है। और हम सुसमाचार को मीठा नहीं बनाते हैं और इसे बिना किसी अन्य स्पष्टीकरण के केवल यीशु को अपने दिल में आने के लिए कहते हैं।

यह अच्छा विचार नहीं है। लेकिन हम सात कदम भी नहीं बताते, अरे वाह, यह मुझे परेशान करता है। ये कदम नहीं हैं, और इनका कभी इरादा भी नहीं था।

वे विश्लेषण करने के तरीके हैं कि पूर्ण विश्वास का क्या अर्थ है। क्या वे सुसमाचार प्रस्तुत करने में आवश्यक हैं? नहीं। लेकिन निश्चित रूप से आप तथ्य देते हैं और लोगों को मसीह पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

और इस तरह सहमति निहित है. ज्ञान, सहमति, विश्वास. नोटिटिया, एसेन्सस , फिडुसिया।

मेरी लैटिन में इतालवी रंगत है क्योंकि मैंने डॉक्टरेट की पढ़ाई में मध्ययुगीन धर्मशास्त्र एक रोमन कैथोलिक भिक्षु से सीखा था, जिसके पास रोम से पीएचडी सहित कई डिग्री थीं। उन्होंने कहा कि जब वे अपनी कक्षाओं के लिए एकत्र हुए, तो छात्र कई जगहों से आए थे। मुझे कई देशों में लैटिन

भाषा में पढ़ाना था। लेकिन यह इटली में था, इसलिए यह इतालवी और लेटिन दोनों था, और मैं इस विषय पर बात करना बंद कर दूंगा।

हम मसीह के उद्धारक कार्य की प्रशंसा करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, क्योंकि यह उद्धारक विश्वास का उद्देश्य है। उद्धार का एकमात्र आधार पापियों के स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु है। जॉन स्टॉट ने अपनी अद्भुत पुस्तक, *द क्रॉस में इस बात पर जोर दिया है, जिसे कई लोग उनकी सबसे बड़ी कृति मानते हैं। मसीह के बारे में*, पृष्ठ 202 से 203.

स्टॉट ने कहा कि प्रतिस्थापन प्रायश्चित का सिद्धांत नहीं है, न ही यह अन्य छवियों के साथ एक विकल्प के रूप में अपनी जगह लेने के लिए एक अतिरिक्त छवि है। यह बल्कि प्रत्येक छवि का सार है और प्रायश्चित का दिल है। यह महत्वपूर्ण है, मसीह को वस्तु के रूप में, विश्वास को बचाने के एकमात्र उद्देश्य के रूप में प्रशंसा करने के लिए।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आस्था उतनी ही अच्छी होती है जितनी उसकी वस्तु। अयोग्य वस्तुओं में बहुत अधिक आस्था न केवल गलत होती है बल्कि कभी-कभी दुखद भी होती है। 1978 के जोन्सटाउन नरसंहार के बारे में सोचें, जब सैकड़ों लोग, यह मुझे गुस्सा दिलाता है, गरीब लोग, और अल्पसंख्यक, मुझे बस गुस्सा दिलाते हैं।

मैं इस तरह से खराब धर्मशास्त्र से नफरत करता हूँ क्योंकि यह लोगों को चोट पहुंचाता है। हे भगवान, यह लोगों को नरक में भेजता है। मैं इसके प्रचारकों से नफरत नहीं करता, लेकिन मुझे उनके संदेश से नफरत है।

गुयाना में पंथ के नेता जिम जोन्स के निर्देश पर सैकड़ों लोगों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली। दुख की बात है कि उन लोगों को जोन्स पर बहुत भरोसा था और उनके गलत विश्वास के कारण उन्हें अपनी जान गवानी पड़ी। छोटे बच्चों ने वह जहर पी लिया।

लूथर ने सही कहा कि लूथर एक ऐसा किरदार है। मुझे पता है कि वह गंदी भाषा बोलता था, और मुझे पता है कि वह अतिशयोक्ति करता है, लेकिन लड़के, उसका सामान बहुत यादगार है। उसने कहा कि यीशु में थोड़ा सा विश्वास बचाता है क्योंकि यीशु कौन है और उसने क्या किया है।

अयोग्य वस्तुओं में बहुत अधिक विश्वास से उद्धार नहीं होता। थोड़ा विश्वास हम केवल थोड़े विश्वास की अनुशंसा नहीं कर रहे हैं, लेकिन मैं उनकी बात समझता हूँ। मुद्दा यह है कि यीशु ही उद्धार करने वाले विश्वास की वस्तु है।

पॉल हमारा भरोसेमंद मार्गदर्शक है, रोमियों 10:17। विश्वास सुनने से आता है, और जो सुना जाता है वह मसीह के बारे में संदेश के माध्यम से आता है। मुझे यह सुनिश्चित करना है कि हम यहाँ एक ऐसे विषय को कवर करें जिसके बारे में मुझे विश्वास नहीं है कि मैंने स्पष्ट रूप से लिखा है।

पहले, हमने आरंभिक सुसमाचारीय पश्चाताप को मसीहियों के जीवन में निरंतर पश्चाताप से अलग किया था। सुसमाचारीय पश्चाताप, ईसाई पश्चाताप, मैं इसे कहना पसंद करता हूँ। इसी तरह, हम आरंभिक उद्धारकारी विश्वास को निरंतर विश्वास से अलग करते हैं।

जब हमने उद्धार की एकमात्र शर्त के रूप में विश्वास को प्रस्तुत करने वाले अंशों का हवाला दिया, यूहन्ना 3:16, रोमियों 1:16, और 17, गलातियों 2:16, इफिसियों 2:8, यूहन्ना 3:16, रोमियों 1:16, 17, गलातियों 2:16, इफिसियों 2:8, हम आरंभिक उद्धारक विश्वास के महत्व पर जोर देते हैं। अब, हम पुष्टि करते हैं कि विश्वास ईसाइयों के चल रहे जीवन का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विश्वास आरंभिक और उद्धारक है, और यह आजीवन है।

यह आरंभिक और बचाव करने वाला है, और यह आजीवन है। क्योंकि हम केवल एक बार और हमेशा के लिए विश्वास से नहीं बचाए जाते हैं, बल्कि हम अपने जीवन के हर दिन विश्वास से जीते हैं। हम आरंभिक विश्वास से बचाए जाते हैं।

हम निरंतर विश्वास या ईसाई विश्वास के द्वारा जीते हैं, मुझे लगता है कि हम इसे कह सकते हैं। 2 कुरिन्थियों 5, 6, और 7, हम हमेशा आश्वस्त रहते हैं और जानते हैं कि जब हम शरीर में घर पर होते हैं, तो हम प्रभु से दूर होते हैं। वह जीवित होने और स्वर्ग में मसीह की तत्काल उपस्थिति से अलग होने पर विचार कर रहा है, और वह शरीर से अनुपस्थित होने, मरने और हमारे अमूर्त भाग, हमारी आत्मा या आत्मा में प्रभु के साथ उपस्थित होने पर विचार कर रहा है।

हम हमेशा आश्वस्त रहते हैं और जानते हैं कि चाहे हम शरीर में घर पर हों या शरीर से दूर, जब हम शरीर में घर पर होते हैं, तो हम प्रभु से दूर होते हैं। आइए इसे एक बार और आजमाएँ। हम हमेशा आश्वस्त रहते हैं और जानते हैं कि जब हम शरीर में घर पर होते हैं, तो हम प्रभु से दूर होते हैं।

क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, न कि रूप से। 2 कुरिन्थियों 5:6, और 7 में पौलुस पुराने नियम की सामान्य छवि का उपयोग करता है। यह चलने की एक सार्वभौमिक मानवीय छवि है जो जीवन जीने के लिए एक रूपक के रूप में है, जो परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है।

हम उसे देख नहीं सकते। 1 पतरस 1 में इसे दो बार कहा गया है। हम उसे नहीं देखते, लेकिन हम महिमा से भरे हुए, उसमें आनन्दित होते हैं।

पतरस कहता है, "हालाँकि तुम उसे अभी नहीं देखते, फिर भी तुम उससे प्रेम करते हो।" यह सच है, लेकिन हम उसे नहीं देखते। इसका मतलब है कि हम विश्वास से चलते हैं।

मसीही जीवन विश्वास से जिया जाता है, महिमावान उद्धारकर्ता को देखकर नहीं। या गलातियों 2:20 के बारे में क्या ख्याल है? मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, मसीह के साथ एकता में हूँ, उसकी मृत्यु में भाग ले रहा हूँ, और अब मैं जीवित नहीं हूँ। इसका अर्थ है कि मैं स्वयं हूँ, लेकिन मसीह मुझमें रहता है।

मैं अब शरीर में जो जीवन जी रहा हूँ, वह ईश्वर के पुत्र पर विश्वास से जी रहा हूँ जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए खुद को दे दिया। यदि आपको केवल 12 श्लोक याद करने हों, तो यह उनमें से एक हो सकता है। ओह माय, इसकी गर्मजोशी, सुसमाचारवाद, आशीर्वाद, विश्वास से जीने का प्रोत्साहन।

गलातियों 2:20. मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है। और अब मैं शरीर में जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।

जैसे पश्चाताप आरंभिक और आजीवन होता है, वैसे ही विश्वास आरंभिक और उद्धारक है, और यह आजीवन मसीही विश्वास भी है। दूसरा थिस्सलुनीकियों 1, 3। हे भाइयो और बहनों, हमें तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह सही भी है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बढ़ रहा है, और तुममें से हर एक का एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है। तुम्हारा विश्वास बढ़ रहा है।

2 थिस्सलुनीकियों 1:3. पश्चाताप की तरह, विश्वास भी परमेश्वर का उपहार है और मनुष्य की ज़िम्मेदारी भी। क्या मैं यहाँ पैटर्न देख रहा हूँ? ज़रूर, आप देख रहे हैं। ज़रूर, आप देख रहे हैं।

यह बहुत सुंदर है। इस संबंध में बाइबल की शिक्षा सममित है। यह स्पष्ट है।

यह सीधा और मददगार है। मैं कभी भी बाइबल की आलोचना नहीं कर रहा हूँ, लेकिन हर सिद्धांत ऐसा नहीं है क्योंकि हमारे पास वह सब कुछ नहीं है जो हम चाहते हैं, और कभी-कभी हमें चीजों को एक साथ रखना पड़ता है, लेकिन हमारे पास इस क्षेत्र में एक बहुत अच्छी तस्वीर है। पश्चाताप ईश्वर का उपहार है।

याद रखें कि शब्द-अवधारणा संबंधी भ्रान्ति न करें। मुझे खेद है। हाँ, पश्चाताप ईश्वर का उपहार है।

विश्वास भी ईश्वर का उपहार है। हमारे पास हमेशा विश्वास शब्द नहीं होता, लेकिन हमारे पास इसकी अवधारणा होती है। प्रेरितों के काम 13:48.

जब अन्यजातियों ने सुना कि पौलुस और बरनबास यहूदियों से फिरकर अन्यजातियों को प्रचार करने लगे हैं, तो वे आनन्दित हुए और प्रभु के वचन का आदर किया, और जितने अनन्त जीवन के लिये नियुक्त किये गये थे, उन सब ने विश्वास किया। अनन्त जीवन के लिये परमेश्वर की नियुक्ति, वास्तव में उनका अनन्त चुनाव, मसीह में उनके विश्वास का परिणाम था, जैसा कि सुसमाचार में प्रस्तुत किया गया था। प्रेरितों के काम 13:48.

इस अर्थ में, परमेश्वर विश्वास का उपहार देता है। यूहन्ना 6, 35 और 44. यीशु ने उनसे कहा, मैं जीवन की रोटी हूँ; जो कोई मेरे पास आता है, अर्थात् मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि हमने देखा, वह कभी भूखा नहीं रहेगा, और जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा नहीं रहेगा।

हाँ, यहीं हमने इसे देखा। कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले, और मैं उसे अंतिम दिन जिलाऊँगा। एक बार फिर, यीशु के पास आना यीशु में विश्वास करने का पर्याय है।

यूहन्ना 6, 35. कोई मेरे पास नहीं आ सकता, और कोई मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले। पौलुस शब्द का उपयोग नहीं करता है, यूहन्ना पौलुस की तरह बुलावा शब्द का उपयोग नहीं करता है, लेकिन अवधारणाएँ ओवरलैप होती हैं।

जॉन का आकर्षित करना पॉलिन के बुलाने जैसा है। कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता, मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींचे नहीं, बुलाए नहीं। अर्थात्, परमेश्वर विश्वास का उपहार इस अर्थ में देता है कि जो परमेश्वर द्वारा खींचे जाते हैं, जिन्हें परमेश्वर द्वारा बुलाया जाता है, वे आते हैं, वे विश्वास करते हैं।

भगवान पापियों के लिए अच्छे हैं, हमें वो सब देते हैं जिसकी हमें ज़रूरत है। अहा, तो यह सब भगवान का है, और हमें कुछ नहीं करना है, है न? गलत। जैसे पश्चाताप भगवान का उपहार और हमारी ज़िम्मेदारी दोनों है, वैसे ही विश्वास के साथ भी ऐसा ही है।

विश्वास ईश्वर का उपहार है, लेकिन यह मनुष्य की जिम्मेदारी भी है। नए नियम के कई पाठ इस बात की पुष्टि करते हैं। मत्ती 8:26.

यीशु ने उनसे कहा, "हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो? तब उसने उठकर आँधी और पानी को डाँटा, और बड़ा शान्त हो गया।" मत्ती 8:26. यूहन्ना 8:24.

मैंने तुमसे कहा, तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करोगे कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे। यूहन्ना 8:24. यीशु अपने यहूदी विरोधियों से कहते हैं।

लड़का, वे उसके पीछे पड़े हैं। ओह, मेरी बात। हम जानते हैं कि हमारा पिता कौन है, वे कहते हैं।

हे भगवान। बुल्टमैन गलत था। पहली सदी के लोग, खेतों में रहने वाले गूंगे लोग, समझते थे कि कुंवारी लड़कियों का जन्म हर दिन नहीं होता।

नहीं, यह कोई मिथक नहीं है। यह एक चमत्कार था, और लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया। क्या तुम मजाक कर रहे हो? नहीं।

मुझे पता है कि मरियम कैसे गर्भवती हुई और यहूदी नेताओं ने यीशु के सामने यह बात रखी। इस मामले में मरियम को बहुत कुछ सहना पड़ा। मुझे लगता है कि यूसुफ को भी ऐसा ही सहना पड़ा होगा।

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, और तुम और तुम्हारा घराना उद्धार पाएगा। प्रेरितों के काम 16:31. रोमियों 10:2-4.

चूँकि इस्राएली परमेश्वर की धार्मिकता से अनभिज्ञ हैं और उन्होंने अपनी धार्मिकता स्थापित करने का प्रयास किया, इसलिए वे परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन नहीं हुए। क्योंकि मसीह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त व्यवस्था का अन्त है। रोमियों 10:2-4.

इन अद्भुत सत्यों के बारे में हमें क्या कहना चाहिए? विश्वासी परमेश्वर के उद्धारक विश्वास और सुसमाचारीय पश्चाताप के अच्छे उपहारों के लिए आभार के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। हम उसे हमें परिवर्तित करने के लिए, हमें पाप से मसीह की ओर मोड़ने के लिए धन्यवाद देते हैं, जैसा कि सुसमाचार में प्रस्तुत किया गया है। हम पश्चाताप और विश्वास का जीवन जीने के लिए हमें मजबूत करने के लिए अनुग्रह की आशा करते हैं।

हम दूसरों के साथ खुशखबरी साझा करना चाहते हैं ताकि वे यीशु और उनके द्वारा पेश किए जाने वाले जीवन के नए तरीके को जान सकें। वैश्विक चर्च के नेताओं ने इसे अच्छी तरह से समझा, इसे लॉज़ेन कोवेनेंट में लिखा, ऑनलाइन [www.lausanne.org](http://www.lausanne.org) पर। सामग्री स्लैश कोवेनेंट स्लैश, बस लॉज़ेन कोवेनेंट पर जाएँ और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं।

लौसने। उद्धरण : हम, 150 से अधिक देशों से यीशु मसीह के चर्च के सदस्य, परमेश्वर की महान मुक्ति के लिए उसकी स्तुति करते हैं। हम मानते हैं कि सुसमाचार पूरी दुनिया के लिए परमेश्वर का शुभ समाचार है, और हम उसकी कृपा से मसीह के आदेश का पालन करने, इसे सभी मानव जाति के लिए घोषित करने और हर राष्ट्र के लोगों को शिष्य बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि केवल एक ही उद्धारकर्ता और केवल एक ही सुसमाचार है। हम मानते हैं कि प्रकृति में उनके सामान्य प्रकाशन के माध्यम से हर किसी के पास परमेश्वर का कुछ ज्ञान है, लेकिन हम इस बात से इनकार करते हैं कि यह हमें बचा सकता है, क्योंकि लोग अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं। रोमियों 1, एक उद्धरण।

हम धर्मों और संवादों को मिलाने के हर तरह के समन्वयवाद को मसीह और सुसमाचार के लिए अपमानजनक मानते हैं, जिसका अर्थ है कि मसीह सभी धर्मों और विचारधाराओं के माध्यम से समान रूप से बोलते हैं। इसके बजाय, यीशु को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में घोषित करने का मतलब है पापियों की दुनिया के लिए ईश्वर के प्रेम की घोषणा करना और सभी को पश्चाताप और विश्वास की पूरी तरह से व्यक्तिगत प्रतिबद्धता में उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में उनका जवाब देने के लिए आमंत्रित करना। वाह, यह बहुत बढ़िया है।

प्रभु की स्तुति करो। ओह, मुझे पता है कि मैं अच्छे लोगों के बारे में कहूंगा। मैं यह मूल्यांकन नहीं कर सकता कि वे कितने इंजीलवादी हैं जो कहते हैं, ओह नहीं, वे वहां यीशु के बारे में कभी नहीं सुनेंगे, इसलिए उनके पास कोई और तरीका होना चाहिए।

मुझे खेद है, पूरी दुनिया में 150 देशों के लोग बाइबल पर विश्वास करते हैं और वाचा का निर्माण करते हैं। जॉन ने अपनी स्पष्ट सोच और लेखन, अपने ठोस धर्मशास्त्र और इस तरह के बयानों को प्रस्तुत करने की अपनी विनम्रता के साथ वहां नेतृत्व का एक वास्तविक बिंदु शुरू किया। लेकिन यह केवल वह ही नहीं था, और उन चीजों पर आम सहमति थी।

कुछ बातें हैं जिनके बारे में हमें सोचना चाहिए: पश्चाताप ईश्वर का उपहार है। पश्चाताप हमारी जिम्मेदारी है।



तो, यह हमारे सुसमाचार प्रचार को कैसे प्रभावित करता है? ओह, यह बहुत ज़्यादा प्रभावित करता है। जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो हम लोगों की परमेश्वर को चुनने की स्वतंत्र इच्छा पर भरोसा नहीं करते। हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा काम करके उन्हें विश्वास और पश्चाताप का उपहार देगा।

क्या यही सुसमाचार है? नहीं, सुसमाचार है विश्वास करना। सुसमाचार है पश्चाताप करना। और हम प्रभु पर भरोसा करते हैं कि वह अपने वचन के माध्यम से श्रोताओं के जीवन में काम करेगा।

तो, इस तरह से, मेरा सुधारित धर्मशास्त्र सुसमाचार प्रचार को प्रेरित करता है क्योंकि परमेश्वर के लोग वहाँ हैं और वह अपने लोगों को अपने पास लाने के लिए अपने वचन का उपयोग करेगा। ओह, कभी-कभी वह हमें आश्चर्यचकित करता है, और हम सभी शायद ऐसे लोगों को जानते हैं जो मर चुके हैं, और हमने कहा कि वह बहुत प्यारी इंसान थी और कई मायनों में बहुत अच्छी इंसान थी। मुझे बहुत दुख है कि उसने कभी यीशु पर विश्वास नहीं किया, भले ही उसने सुसमाचार सुना हो।

और कभी-कभी हम कहते हैं, अगर हम ईमानदार हैं, हे भगवान, भगवान ने उस आदमी को बचा लिया। वह कितना दुष्ट था। ओह, कितना पापी था।

परमेश्वर के पास हास्य की भावना है, और परमेश्वर हमें आश्चर्यचकित करता है, और वह पवित्र और न्यायी है। और नहीं, हम प्रभु और उसके तरीकों के बारे में सब कुछ नहीं समझते हैं। धर्म परिवर्तन, पश्चाताप और विश्वास के बारे में एक मुद्दा है क्योंकि यह दुनिया की आबादी को प्रभावित करता है।

यह आज एक मुद्दा है। उदारवादी धर्मशास्त्र बहुलवादी हैं। सभी धर्मशास्त्र और सभी दर्शन ईश्वर की ओर ले जाते हैं।

कभी-कभी, वे भयानक पंथों के लिए अपवाद बनाते हैं। भयानक पंथ जो लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। वैसे भी, यही बहुलवाद है।

सभी रास्ते ईश्वर की ओर ले जाते हैं। दुखद रूप से, मेरे अनुमान में, इंजीलवादी, फिर भी सच्चाई से असहमत हैं। वे एकजुट होकर सार्वभौमिकता को अस्वीकार करते हैं, यह दृष्टिकोण कि सभी को बचाया जाता है, और वे एकजुट होकर बहुलवाद को अस्वीकार करते हैं, सभी धर्म ईश्वर की ओर ले जाते हैं, लेकिन वे इस बात पर असहमत हैं, वे इस बात पर भी सहमत हैं कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ही ईश्वर तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता है, लेकिन वे इस बात पर असहमत हैं कि क्या सभी को बचाए जाने के लिए सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है।

यह एक भेद है। बहुलवाद, सभी रास्ते ईश्वर की ओर ले जाते हैं। समावेशवाद, यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है, लेकिन आप सुसमाचार सुने बिना भी बचाए जा सकते हैं।

बहिष्कारवाद, मुझे नहीं पता कि ये शब्द कहां से आए हैं, लेकिन कुत्ते को बदनाम करने से उसकी पिटाई हो जाती है। बहिष्कारवाद या उससे भी बदतर, प्रतिबंधवाद, अच्छा लगता है, यह

आपको सिखाता है कि न केवल यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है, बल्कि आपको बचाए जाने के लिए उस पर विश्वास करना चाहिए। इससे पहले कि मैं भूल जाऊं और आगे बताऊं, कैलिफोर्निया बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ क्रिश्चियन मिनिस्ट्रीज के डीन क्रिस्टोफर मॉर्गन और मैंने एक किताब का सह-संपादन किया; वास्तव में, यह हमारे दिलों पर भारी था।

समावेशवाद के प्रति प्रतिक्रिया सुनने से विश्वास आता है। हम अपने विश्वासी समावेशवादी भाइयों और बहनों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, और यही वे हैं: साथी विश्वासी। हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, हम उनके लेखन से उद्धरण देते हैं, हम उनके पाँच मुख्य तर्क प्रस्तुत करते हैं, यह स्वीकार करते हुए कि उनमें से हर कोई उन सभी तर्कों का उपयोग नहीं करता है, और कुछ दूसरों की तुलना में बेहतर हैं, और हम उनका जवाब देते हैं, सिर्फ हम ही नहीं, हमारे पास ये काम करने के लिए विशेषज्ञ हैं, उन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं, हमारे पास सुसमाचार की सकारात्मक प्रस्तुतियाँ हैं और इसी तरह के अध्ययन हैं। समावेशवाद के प्रति प्रतिक्रिया सुनने से विश्वास आता है।

इंटरवर्सिटी प्रेस, उस पुस्तक के लिए अनुबंध प्राप्त करना आसान था क्योंकि जब मैंने उस समय इंटरवर्सिटी में अपने संपादक एंडी लेपो से बात की, तो मैंने कहा, एंडी, आपके पास समावेशिता पर कई अच्छी किताबें हैं; मुझे लगता है कि शायद अब समय आ गया है कि आप बहिष्कारवाद पर भी एक किताब लिखें। हाँ, अपने हित के लिए, वे दूसरे का समर्थन नहीं कर रहे थे, लेकिन वे दोनों पक्षों को प्रस्तुत करना चाहते थे, इसलिए यह आसान था। वैसे भी, फिर से, समावेशितावादी और बहिष्कारवादी बहुलवाद को अस्वीकार करने में एकजुट हैं, और यह महत्वपूर्ण है, ठीक है? यह एक और सुसमाचार है, यह कोई सुसमाचार नहीं है, है ना? और सार्वभौमिकता, यह दृष्टिकोण कि सभी को बचाया जाएगा।

वे इस बात पर भी सहमत हैं कि उद्धार के लिए यीशु, मृत्यु और पुनरुत्थान आवश्यक हैं, और यीशु, मृत्यु और पुनरुत्थान के बिना कोई भी कभी भी नहीं बचाया जा सकता है। हालाँकि, वे ऑन्टोलॉजी पर सहमत हैं। ऑन्टोलॉजिकल रूप से, यीशु को किसी को बचाने के लिए मरने और उठने की आवश्यकता थी, लेकिन वे ज्ञानमीमांसा और आपको बचाए जाने के लिए क्या जानना चाहिए, इस पर असहमत हैं।

ज्ञानमीमांसा के अनुसार, समावेशवादी कहते हैं, और वे इसे अलग-अलग तरीकों से करते हैं, लेकिन आम तौर पर, आप सामान्य प्रकाशन के माध्यम से ईश्वर की खोज करके बच सकते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि आप बच सकते हैं, कुछ कहते हैं कि आप नहीं बच सकते, ठीक है? लेकिन वे रोमियों 1 पर जाते हैं, और वे कहते हैं, रोमियों 1 यह नहीं कहता है कि आप इस तरह से बच नहीं सकते। खैर, मुझे नहीं पता कि आपको यह कहने के लिए कितना करीब जाना होगा।

यह निश्चित रूप से यह नहीं कहता कि आप इस तरह से बचाए जा सकते हैं, और यह कहता है कि जो लोग सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन को प्राप्त करते हैं, उनके पास कोई बहाना नहीं है। रोमियों 10 कहता है कि मसीह में सुनने से विश्वास आता है। तो, यह मेरे लिए एक अच्छा तर्क नहीं है, लेकिन फिर भी, वे ऐसा कहते हैं। वे यह भी कहते हैं, और फिर से, बेहतर इंजीलवादी

समावेशवादी इस तर्क का उपयोग नहीं करते हैं, ठीक है? क्योंकि इसमें बहुलवाद की बू आती है, लेकिन यह बहुलवाद नहीं है।

यह समावेशवाद का दूसरा रूप है। वे कहते हैं कि ईश्वर दयालु और प्रेमपूर्ण है और वह चाहता है कि सभी का उद्धार हो, जो वास्तव में सच है, लेकिन शास्त्रों में ऐसा नहीं कहा गया है, और फिर, कई समावेशवादी इस दृष्टिकोण को अस्वीकार भी करते हैं। यह विश्व धर्मों के समावेशवाद जैसा है।

कोई भी व्यक्ति जो ईमानदारी से हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, बौद्ध धर्म या इस्लाम के दायरे में ईश्वर की तलाश करता है, भगवान उन्हें यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बिना उनकी जानकारी के बता देंगे। मॉर्गन और मैं दृढ़ता से, फिर भी सम्मानपूर्वक, दृढ़ता से उस व्यवसाय से असहमत हैं, जैसा कि कई समावेशवादी करते हैं। हम उस सामान्य रहस्योद्घाटन तर्क और प्रस्तुत किए गए अन्य लोगों से भी असहमत हैं।

हम सिर्फ असहमत हैं। हम सिर्फ असहमत नहीं हैं; हम पवित्र शास्त्र की शिक्षा के आधार पर दृढ़ता से असहमत हैं। आप कहते हैं कि इससे चर्च पर हर जगह सुसमाचार पहुँचाने का बहुत बड़ा बोझ पड़ता है।

आमीन। इस पुस्तक के सह-संपादन के बाद, मैंने ट्रांसवर्ल्ड रेडियो की सावधानीपूर्वक जांच की और मासिक रूप से सांकेतिक सहायता शुरू की क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार, सच्चे सुसमाचार को दुनिया के हर कोने में, उन लोगों तक पहुंचाते हैं जिन्हें उनकी सरकारों द्वारा आधिकारिक रूप से सुसमाचार सुनने की अनुमति नहीं है। और वे रेडियो भी भेजते हैं, और लोगों की पूरी जनजातियाँ एक साथ इकट्ठा होती हैं, और लोगों के पूरे समूह एक घर के तहखाने में इकट्ठा होते हैं।

यह रोमांचक है। मेरे कुछ दोस्त कहते हैं कि ट्रांसवर्ल्ड रेडियो में कोई सुधार नहीं हुआ है। यह सही सुसमाचार का प्रचार करता है।

यह दुनिया भर में ऐसा करता है। और इसका नाम क्या है? कुछ कार्यक्रम महिलाओं के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। क्या यह रेचेल चिल्ड्रन है? कुछ ऐसा ही।

दुनिया भर में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। ठीक है? कुछ संदर्भों में आश्चर्यजनक रूप से दुर्व्यवहार किया जाता है। महिलाओं ने सुसमाचार बॉक्स, रेडियो और ट्रांसवर्ल्ड रेडियो के मंत्रालय के माध्यम से यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जाना है।

तो, मुझे एक अपश्चातापी बहिष्कारवादी के रूप में दर्ज करें। लोगों को उद्धार पाने के लिए यीशु के सुसमाचार को सुनने की आवश्यकता है। हाँ, सत्ताशास्त्रीय रूप से, वह एकमात्र उद्धारकर्ता है, लेकिन ज्ञानमीमांसा के अनुसार, क्या ईश्वर किसी द्वीप पर सीधे खुद को प्रकट कर सकता है? बेशक, वह कर सकता है।

लेकिन जैसा कि जिम पैकर कहते हैं, हमें किसी भी विशेष मामले में बाइबल की शिक्षा के आधार पर यह उम्मीद करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, हम इस तरह से कार्य करते हैं, जैसे कि उन्हें सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे सर्वोत्तम ज्ञान के अनुसार, उन्हें इसकी आवश्यकता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम औचित्य के महत्वपूर्ण सिद्धांत को उठाएंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र संख्या 11, रूपांतरण है।